क्योंकि प्रकाश इस तरह खुल कर हमें सब कुछ समझा रहे थे, मुझे लगा मैं उनसे खुल कर कोई भी सवाल आसानी से पूछ सकती हूँ। मैंने पूछा, "ये ही है जो हम सब को और बाकी सब को चाहिए, पर इसकी कीमत क्या है?" अगर यह महंगे हुए तो हम school में टॉयलेट बनवाने के लिए इतने पैसे कहाँ से लायेंगे?

प्रकाश मुस्कुराए और कहा, "ये महंगे नहीं है, सभी सीमेंट के गोलों की कीमत कुल 2500रु है जिसे 500 बच्चे इस्तेमाल कर सकते हैं। है ना ये कितना सस्ता उपाय? बीमार पड़ने से तो बहुत सस्ता!"

विनय ने पूछा, "जब ये पूरा भर जायेगा, फिर क्या?" प्रकाश ने एक बार फिर सहज रूप से कहा, "हाँ! ये भर जायेगा, पर 15–20 साल में, तब तुम टॉयलेट सफाई van (वैन) को बुलाकर इसे खाली करवा सकते हो।" यह बात सुनकर हम सबने नाक–मुंह सिकोड़ लिए। ऐसा लगा जैसे प्रकाश हम सब की चुटकी ले रहे थे। वह हँस रहे थे, "हाँ ये बदबूदार है, पर ये मिट्टी को उपजाऊ बनाने के लिए बहुत बढ़िया है। बस इसको सही जगह डालना बहुत ज़रूरी है।"

सही जगह..! शायद हमारे गाँव के खेतों में।

यह टॉयलट रिंग तैयार है